सत्य का संवादिता या अनुरूपता का सिद्धांत (Correspondence Theory of Truth)

सत्य का संवादिता या अनुरूपता का सिद्धांत के अनुसार ज्ञान की सत्यता का अर्थ है ज्ञान का तथ्य या वास्तविकता के साथ मेल अथवा संवाद| दूसरे शब्दों में यदि हमारे ज्ञान के अनुरूप वास्तविकता में भी तथ्य हो तो हमारा ज्ञान सत्य होगा, अन्यथा असत्य| इस सिद्धांत के अनुसार ' सत्य वस्तुनिष्ठ यथार्थ के प्रति निष्ठा है' (Truth is fidelity to objective reality). सत्य के स्वरूप के संबंध में यह सिद्धांत बताता है कि सत्य तथ्य के विषय में कथन तथा वास्तविक तथ्य के बीच मेल या अन्वय है| सत्य का संबंध वस्तुओं के विषय में कथनों से है| इसके विषय में हॉस्पर्स कहते हैं, " प्रतिज्ञप्ति (तर्कवाक्य) सत्य है यदि वह किसी तथ्य से संवाद रखती है| उदाहरण के लिए यदि यह एक तथ्य है है कि आपके पास एक पालतू तेंदुआ है, और यदि आप यह कहते हैं कि आपके पास एक पालतू तेंदुआ है, तो आपका कथन सत्य है, क्योंकि वह उस तथ्य से संवाद रखता है| इस सिद्धांत के अनुसार 'सत्यता तथ्य से संवाद है'| उदाहरण के अनुसार यदि वास्तविकता में तेंदुआ नहीं हो तो यह तर्क वाक्य असत्य होगा| यदि हमें अभी यह ज्ञान हो रहा हो कि हमारे सामने एक बाघ है और सचमुच बाहर वास्तविकता में कोई बाघ हो तब तो हमारा ज्ञान सत्य कहलाएगा और यदि वास्तविकता में कोई बाघ हो ही नहीं और हमें ऐसा ज्ञान हो रहा हो तो हमारा ज्ञान असत्य और ब्रह्मपूर्ण कहा जाएगा| इस प्रकार सत्यता का अर्थ है ज्ञान का वास्तविकता के साथ मेल और सत्यता का अर्थ है ज्ञान का वास्तविकता के साथ भेद या विरोध|

ज्ञान तथा तथ्य के बीच संवाद या मेल सत्यता की सिर्फ परिभाषा नहीं है, बल्कि उसकी कसौटी भी है| अर्थात कोई ज्ञान सत्य है या असत्य उसकी जांच के लिए कसौटी भी यही है कि हम देखें कि हमारे ज्ञान का वास्तविकता के साथ मेल है या नहीं| इस तरह संवादिता सिद्धांत के अनुसार ज्ञान तथा तथ्य के बीच संवाद या मेल सत्यता की परिभाषा तथा कसौटी दोनों है|

आमतौर पर हमें लगता है कि किसी वस्तु के ज्ञान के रूप में हमारी चेतना में कुछ प्रत्यय मौजूद रहते हैं| इन प्रत्ययों के वास्तविकता के साथ मेल होने का क्या अर्थ है? वास्तववाद के कई संप्रदाय हैं और विभिन्न संप्रदायों के चिंतक इस प्रश्न के संबंध में कुछ अलग अलग प्रकार के मत दिए हैं| ज्ञान की सत्यता -असत्यता के संबंध में यह सिद्धांत सर्वसाधारण का सिद्धांत मालूम पड़ता है| दर्शन में इसके प्रतिपादक तथा पोषक वे विचारक हैं जिन्हें वास्तववादी या यथार्थवादी कहा जाता है| सत्य को जांचने का संवादिता या अनुरूपता का सिद्धांत यथार्थवादियों द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है|

इस प्रकार संवादिता या अनुरूपता सत्य का स्वरूप ही नहीं वरन सत्य की कसौटी भी है|